डॉ. उमाशंकर गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास
राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी, वाराणसी
मो.– 9415391389

HISTORY

(इतिहास)

बी.ए. द्वितीय वर्ष

# बिस्मार्क की विदेश नीति

# स्वघोषणा (disclaimer/self-declaration)

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है | आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित है | सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे | इस कंटेंट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है |

**“The content is exclusively meant for academic purposes and for enhancing teaching and learning. Any other use for economic/commercial pupose is strictly prohibited. The ushers of the content shall not distribute, dissiminate or share it with anyone else and its use is restricted to advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge.”**

# बिस्मार्क की विदेश नीति

1870 ई0 में जर्मनी की एकीकरण के साथ यूरोप की राजनीति में एक शक्तिशाली जर्मन राष्ट्र का उदय हुआ। 1871–1890 ई0 तक चांसलर बिस्मार्क ने अपने व्यक्तित्व एवं कूटनीति द्वारा यूरोप की राजनीति को अत्यधिक प्रभावित किया। उसकी विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य यूरोप की राजनीति में जर्मनी की प्रधानता बनाए रखना, कूटनीतिक दृष्टि से फ्रांस को एकाकी रखना, तथा जर्मनी के पक्ष में गुट का निर्माण करना था। बिस्मार्क के दूरदर्शी व्यक्तित्व एवं जर्मनी की सैनिक सैनिक श्रेष्ठता के परिणाम स्वरूप यूरोप की नवीन शक्ति संतुलन व्यवस्था का केन्द्र जर्मनी बन गया। इसी कारण इस युग को 'बिस्मार्क का युग' भी कहा जाता है।

**विदेश नीति के अन्तर्गत बिस्मार्क के कार्यः–**

बिस्मार्क ने 1871–90 ई0 तक 20 वर्षो के कार्यकाल में अपनी विदेशनीति के सिद्धान्तों के अनुरूप कार्य किया। उसने फ्रांस को मित्रहीन रखा, आस्ट्रिया व इटली के साथ मैत्री संधि करके गुट का निर्माण किया तथा रूस व इंग्लैण्ड के साथ सद्भाव पूर्ण सम्बन्ध बनाए रखा। उसने विदेश नीति के अन्तर्गत निम्नलिखित संधिया या समझौते किए–

1. **त्रिसम्राट संघ का निमार्णः–** बिस्मार्क की विदेश नीति के क्षेत्र में प्रथम मुख्य कार्य तीन सम्राट संघ का निर्माण करना था। उसने फ्रांस को मित्रहीन रखने तथा आस्ट्रिया व रूस के साथ घनिष्ठ सम्बंध बनाने पर बल दिया। 1873 ई0 में जब आस्ट्रिया के सम्राट फ्रांसिस जोसेफ ने बर्लिन की यात्रा की। इसी समय रूस के जार अलेक्जेण्डर द्वितीय भी सम्राट विलियन प्रथम से भेंट के लिए आया था। तब बिस्मार्क ने तीन सम्राटों के संघ के गठन की योजना प्रस्तुत की। तीनों सम्राटों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि युद्ध की स्थिति उत्पन्न होने पर तीनों देश पारस्परिक हितों के लिए आपस में विचार विमर्श करेंगें। यह संघ 1878 ई0 के बर्लिन कांग्रेस तक कायम रहा।

   किन्तु जब पूर्वी समस्या को लेकर रूस ने तुर्की पर आक्रमण कर दिया और तुर्की को सेन स्टीफेनों की संधि करने हेतु विवश किया। इसका इंग्लैण्ड व आस्ट्रिया ने घोर विरोध किया। तब बिस्मार्क ने ईमानदार दलाल की भांति सेन स्टीफेनो की संधि पर पुर्नविचार के लिए बर्लिन कांग्रेस 1778 ई0 का आयोजन किया, किन्तु पूर्वी समस्या पर बिस्मार्क ने आस्ट्रिया के पक्ष का सर्मथन किया अतः रूस और जर्मनी के बीच सम्बन्ध कटु हो गए। अतः बर्लिन कांग्रेस के पश्चात रूस के जार ने त्रिसम्राट संघ से अलग होने की घोषणा कर दी। इसी के साथ त्रिसम्राट संघ भंग हो गया।
2. **द्विराज्य संधि (1879 ई0):–** रूस एवं जर्मनी के बीच बढ़ती कटुता तथा फ्रांस से शत्रुता के कारण जर्मनी के लिए दो मोर्चो पर एक साथ युद्ध करना संभव न था। अतः बिस्मार्क ने आस्ट्रिया के साथ 7 अक्टूबर 1879 ई0 को द्विराज्य मैत्री संधि की इस संधि की मुख्य शर्ते निम्नांकित थी–
   1. यदि रूस द्वारा आस्ट्रिया या जर्मनी पर आक्रमण होगा, तब दोनो मित्र एक दूसरे की सहायता करेंगें।
   2. यदि कोई अन्य देश जर्मनी या आस्ट्रिया पर आक्रमण करेगा, तो दूसरा देश तटस्थ रहेगा।
   3. यदि कोई देश रूस की सहायता से जर्मनी या आस्ट्रिया पर आक्रमण करेगा, तो दूसरा देश उसकी सहायता करेगा।
   4. या संधि गुप्त रहेगी तथा पांच वर्ष पश्चात दोनो देशो की सहमति से तीन–तीन वर्ष के लिए बढ़ाई जा सकेगी।

   इस संधि के सम्बन्ध में बेंस ने लिखा है– ''द्विराज्य संन्धि ने बिस्मार्क को दोहरा आश्वासन दिया। यदि जर्मनी पर रूस आक्रमण करता तो आस्ट्रिया कदापि फ्रांस की सहायता नही करता।''
3. **तीन सम्राट संघ की पुनः स्थापना (1881 ई0):–**रूस युद्ध के लिए तैयार नही था अतः वह जर्मनी के साथ संबध सुधारने का प्रयास शुरू कर दिया। रूस में शून्यवाद के बढ़ते प्रभाव के कारण फ्रांस से मित्रता सम्भव न था। उधर बिस्मार्क भी रूस के साथ पुनः मधुर सम्बन्ध बनाने का इच्छुक था। अतः बिस्मार्क ने आस्ट्रिया पर मैत्री पूर्ण दबाव डालकर उसे संधि के लिए राजी कर लिया। किन्तु इसी बीच रूस के जार अलेक्जेण्डर द्वितीय की मृत्यु हो गई और योजना खटाई में पड़ गई। अंततः बिस्मार्क के प्रयासों के परिणाम स्वरूप 18 जून 1881 ई0 को बिस्मार्क और आस्ट्रिया व रूस के राजदूतों ने तीन सम्राट संघ के समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए। इस संधि के द्वारा तीनों देशो ने किसी एक पर चौथे देश का आक्रमण होने पर तटस्थ रहने तथा बाल्कान क्षेत्र में एक दूसरे के हितों का ध्यान रखने का आश्वासन दिया। यह एक गुप्त संधि थी।

4. **त्रिराष्ट्र संधि (1882 ई0):–** बिस्मार्क इटली एवं फ्रांस की मित्रता को जर्मनी के लिए गम्भीर खतरा मानता था। दूसरी ओर इटली ऐसे किसी गुट में शामिल नही होना चाहता था, जिसका एक सदस्य आस्ट्रिया हो। जब 1881 ई0 में ट्यूनिस पर फ्रांस ने अधिकार कर लिया, तब इटली में निराशा फैल गई इटली भी ट्यूनिश पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था। अतः बिस्मार्क ने इटली को संतुष्ट करके संधि के लिए तैयान कर लिया। 20 मई 1882 ई0 का जर्मनी, आस्ट्रिया व इटली के बीच त्रिराष्ट्र संधि हो गई। यह एक सुरक्षात्मक संधि थी। इस संधि की शर्ते निम्नलिखित थी।

   1–तीनो देश एक दूसरे के प्रति मित्रता बनाए रखेंगे और किसी भी देश क विरूद्ध अन्य देश से संधि नही करेगें।

   2–यदि इटली या जर्मनी पर फ्रांस आक्रमण करेगा, तो दोनो देश एक दूसरे की सहायता करेंगे।

   3–दि जर्मनी या आस्ट्रिया पर रूस आक्रमण करेगा, तो इटली तटस्थ रहेगा।

   4–यह संधि पांच वर्ष के लिए होगी, बाद में 3–3 वर्षो के लिए बढाया जा सकेगा।

5. **रूमानिया के साथ संधिः–** 1883 ई0 में रूमानियाय के सम्राट केरोल ने जर्मनी की यात्रा की तब बिस्मार्क ने रक्षात्मक संधि का प्रस्ताव रखा। रूमानिया, रूसा के विरूद्ध एक सुरक्षात्मक संधि चाहता था। अतः 1883 ई0 में जर्मनी, आस्ट्रिया, रूमानिया के बीच एक रक्षात्मक संधि हो गई। यह गुप्त संधि 5 वर्ष क लिए थी किन्तु तीनो देश सहमति से 3–3 वर्ष के लिए बढ़ा सकते थे।

6. **रूस के साथ पुनराश्वासन संधि(1887 ई0):–** 1887 ई0 के बुलगारिया को लेकर रूा और आस्ट्रिया के बीच सम्बन्ध खराब हो गए ओर त्रि सम्राट संघ का अस्तित्व खतरे में पड़ गया। बिस्मार्क की नीति रूस के साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने की थी। रूस ने स्पष्ट कर दिया की वह आस्ट्रिया के साथ काई संधि नही करेगा। अतः बिस्मार्क ने रूस के प्रस्ताव को मानते हुए 18 जून 1887 ई0 को दोनो देशो के बीच पुर्नराश्वासन संधि कर ली ओर आस्ट्रिया को इसकी सूचना नही दी। इस संधि की शर्ते निम्नाकित थी–

   1– यदि दोनो देशों में से किसी एक के ऊपर तीसरा देश आक्रमण करेगा, तो दूसरा देश तटस्थ रहेगा।

   2– जर्मनी ने बुल्गारिया में रूस के अधिकारों का स्वीकार कर लिया।

   3– यह गुप्त संधि तीन वर्ष के लिए होगी।

   बिस्मार्क की रूस के साथ पुनराश्वासन संधि अंतिम गुप्त संधि थी। जो 1890 ई0 तक बिस्मार्क के पद त्याग तक बनी रही।

7. **इंग्लैण्ड के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बंधः–** बिस्मार्क ने इंग्लैण्ड के प्रति सौहार्दपूर्ण नीति बनाए रखने पर बल दिया इंग्लैण्ड की सद्भावना को यथा संभव बनाए रखने के लिए बिस्मार्क ने निम्नलिखित कार्य किए–

   1–इंग्लैण्ड यूरोप की राजनीति में अलगाव की नीति का अनुसरण कर रहा था। अतः बिस्मार्क ने घोषणा की कि ''जर्मनी विस्तारवादी देश नही है और वह साम्राज्यवादी देश भी नही है।'' अतः इंग्लैण्ड व जर्मनी के बीच संघर्ष की संभावना समाप्त हो गई।

   2–बिस्मार्क ने इंग्लैण्ड की नौ सेना को चुनौती नही देने के लिए जर्मन नौ सैनिक ब्रेड़े के विस्तार का काई कदम नही उठाया।

   3–बिस्मार्क ने पूर्वी समस्या में काई रूचि नही ली, ताकि इंग्लैण्ड को काई संदेह न हो।

   4–बिस्मार्क ने अपने पुत्र हर्बर्ट को इंग्लैण्ड में राजदूत नियुक्त किया।

   5–बिस्मार्क ने इंग्लैण्ड से औपनिवेशिक संघर्ष से बचने के लिए जर्मन उपनिवेशों की स्थापना पर ध्यान नही दिया।

   इस प्रकार बिस्मार्क ने इंग्लैण्ड के प्रति सौहार्दपूर्ण नीति का अनुसरण करके फ्रांस का मित्रहीन बनाए रखने में सफल रहा।

**समीक्षाः–** बिस्मार्क एक महान कूटनीतिक व्यक्ति था। उसने 1871–90 ई0 के बीच यूरोप मे जर्मनी की प्रधानता बनाए रखा, यूरोप की शांति को सुरक्षित रखा, फ्रांस को मित्रहीन बनाए रखा, आस्ट्रिया,रूस, इटली से मैत्री संधिया की। उसकी सफलता आश्चर्यजनक थी। किन्तु बिस्मार्क ने कूटनीति की सफलता प्राप्त करने हेतु उचित साधनों और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा की। उसने शांतिकाल में गुप्त संधियों एवं गुटों के निर्माण की प्रणाली प्रारम्भ की। इससे केवल अस्थायी सफलता मिली। जब बिस्मार्क के पद त्याद के बाद फ्रास ने जर्मनी के विरूद्ध संधिया आरम्भ की तब सम्पूर्ण यूरोप दो गुटों में बट गया। यही गुटबंदी प्रथम विश्व युद्ध का कारण भी बना।